12.13 hrs

Title: Regarding reported denial of state honour to Shri Jagdish Bhai, freedom fighter by the Government of Uttar Pradesh.

SPEAKER: The House will now take up the Calling Attention Notice of Yogi Adityanath.

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन के ध्यान में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सवाल लाना चाहता हूं। श्री जगदीश भाई स्वतंत्रता सेनानी थे। जब जयप्रकाश नारायण, हजारीबाग जेल से भागे, तो पुलिस को यह दिखाने के लिए कि जयप्रकाश नारायण अपनी चारपाई पर सोए हुए हैं, श्री जगदीश भाई उनकी चारपाई पर लेटे। उन्होंने देश की आजादी के लिए बहुत जोखिम उठाई, लेकिन उनके निधन पर, जबकि पूरी केन्द्र सरकार को सूचना थी और दिल्ली सरकार को सूचना थी, लेकिन उनके निधन पर उन्हें जो राजकीय सम्मान मिलना चाहिए, वह नहीं मिला। श्री जगदीश भाई ने स्वतंत्रता की लड़ाई जयप्रकाश नारायण के कंधे से कंधा मिलाकर लड़ी। देश की आजादी के संघर्ा में उन्होंने पूरा का पूरा योगदान दिया और देश आजाद होने के बाद, ऐसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के निधन पर न दिल्ली सरकार ने, न केन्द्र सरकार ने और न ही उत्तर प्रदेश सरकार ने उन्हें सम्मान दिया। यह अत्यन्त अमानवीय कार्य, जो नहीं होना चाहिए।

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर) : अध्यक्ष महोदय, मैंने क्वश्चन-आवर सस्पेंशन का, एडजॉर्नमेंट का मोशन दिया। यहां अरुण जेटली जी बैठे हुए हैं। श्री जगदीश भाई संपूर्ण क्रांति के अगुआ नेताओं में से थे। उनके अनेक सहयोगी यहां बैठे हुए हैं। जे.पी. मूवमेंट के स्तम्भ श्री जगदीश भाई थे। उनके नेतृत्व में हमने काम किया। जब जे.पी. हजारीबाग जेल से भागे, तो जे.पी. की चारपाई पर वे इसलिए लेटे ताकि पुलिस को भ्रम बना रहे कि जे.पी. अपनी चारपाई पर सो रहे हैं। उस व्यक्ति की मृत्यु होती है, तो श्री चन्द्र शेखर जी के कार्यालय से प्रधान मंत्री कार्यालय को सूचित किया जाता है, उप प्रधान मंत्री जी को खबर कर दी गई। गृह मंत्री जी ने कहा कि उनके सम्पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ अन्त्येटि की व्यवस्था कर रहे हैं। उनका वाराणसी में 6 तारीख को देहान्त हो गया, लेकिन उन्हें कोई सम्मान नहीं दिया गया। जिनके बल पर आज हम सदन में बैठे हुए हैं, जिनके बल पर देश को आजादी मिली, जिनकी वजह से हम लोग चुनकर सदन में आए, उन्हीं लोगों की सरकार स्वतंत्रता सेनानी के देहान्त पर, उन्हें सम्मान न दे, तो यह बहुत अफसोस की बात है।

महोदय, बहुत कम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी देश में बचे हैं। यदि हमारी सरकार उन बचे हुए स्वतंत्रता सेनानियों को भी सम्मान नहीं दे सकती है, तो उस सरकार को वहां बैठने का कोई अधिकार नहीं है। केन्द्र सरकार ने भले ही उन्हें सम्मान नहीं दिया हो, लेकिन मैं आपके माध्यम से सदन से प्रार्थना करता हूं कि सरकार भले ही उन्हें सम्मान न दे, लेकिन इस सदन द्वारा उन्हें सम्मानित करना चाहिए और आपकी ओर से उनके परिवार को संदेश जाना चाहिए। कोई भी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हो, यह सदन उनका सम्मान करता है।

श्री चन्द्रशेखर (बलिया, उ.प्र.) : अध्यक्ष जी, मैं इस विाय में कुछ नहीं कहना चाहता था क्योंकि यह अत्यन्त दुखद सवाल है। यह बात सही है कि श्री जगदीश भाई की मृत्यु सही मायने में 5 तारीख को ही हो गई थी। उस दिन मुझे सायंकाल 4 बजे खबर आई, लेकिन डॉक्टरों ने उसकी घोाणा नहीं की। उसके आधार पर प्रधान मंत्री, उपराट्रपति और मुझे बताया गया और गृह मंत्री महोदय को भी सूचना दी गई। प्रधान मंत्री महोदय ने शोक संदेश भी भेजा। उपराट्रपति महोदय ने भी उनकी मृत्यु पर शोक-संदेश भेजा। अखबार में छपा, गृह मंत्री ने कहा कि उन्होंने उत्तर प्रदेश की मुख्य मंत्री को कह दिया है कि उनकी अन्त्येटि पूर्ण राजकीय सम्मान के साथ की जाए, लेकिन इस सबके बावजूद 5 तारीख को जब मैं 8.15 बजे वहां पहुंचा, तो कोई सरकारी अधिकारी उपस्थित नहीं था।

अब तक तो सरकार की कृपा रही है कि मेरे जाने पर सरकारी अधिकारियों को खबर होती है कि मैं आ रहा हूं। सब को मालूम था कि मैं उस दिन उन्हीं की अंत्येटि के लिए आ रहा हूं, लेकिन साढ़े ग्यारह बजे जब उनकी लाश को लेकर हम घाट पर गए तो वहां सरकार का कोई अधिकारी नहीं था। मैं वहां मौजूद था और साढ़े 12 बजे से एक बजे तक वहां रहा। मैं जब वहां से चला आया, जब उनकी चिता जल कर समाप्त हो रही थी तो उस समय वहां कोई तहसीलदार रैंक का आदमी फूलों की माला लेकर गया, लेकिन वहां बैठे लोगों ने उसे उनके नजदीक नहीं जाने दिया। मेरे लिए कोई भी अधिकारी नहीं आता है, यह तो उत्तर प्रदेश में सामान्य बात है। मैं देश में जहां भी जाता हूं, वहां मेरे साथ लोग जाते हैं, लेकिन उत्तर प्रदेश में कुछ जगहों को छोड़ कर अधिकारियों का जाना कोई जरूरी नहीं है। मैं वहां से सीधे जयप्रकाशनगर गया और दिन भर वहां रहा। सिवाए वहां के थानेदार और सीओ के जो डिप्टी एसपी होते हैं, जो हमारे लिए थे, कोई बलिया का अधिकारी उस जगह पर नहीं गया।

महोदय, मैं जानना चाहता हूं कि हम राजनीति को कहां तक ले जाएंगे। जगदीश भाई जयप्रकाश नारायण जी के केवल सचिव ही नहीं थे, बल्कि वे 1938 में आंदोलन में आए थे। जयप्रकाश जी 1942 में जब हजारीबाग जेल से भागे थे, जैसे मुलायम सिंह जी ने कहा, उस समय वे शैय्या पर सोए हुए थे। उन्होंने पूरी जिन्दगी जेल में बिताई और जेल से निकलने के बाद 1951 में जयप्रकाश जी ने कहा कि आप हमारा घर बना दीजिए। 1951 से लेकर मृत्युपर्यन्त वे उस गांव में रहे। सारे गांव और उस इलाके के लोग आश्चर्य कर रहे थे कि उत्तर प्रदेश सरकार और अधिकारियों की तरफ से उन्हें कोई सम्मान देने के लिए क्यों नहीं आया। गृह मंत्री जी इस समय यहां नहीं बैठे हैं, मैं जानना चाहूंगा कि क्या गृह मंत्री जी की सूचना पर भी कोई कदम नहीं उठाया जाएगा? ये सारी बातें अखबारों में छपी हैं, ये सब जानने के बाद भी उत्तर प्रदेश सरकार की कान पर जूं तक नहीं रेंगी। किस तरह सरकार चल रही है? क्षमा करेंगे, हमारे जो सरकार चलाने वाले मंत्री यहां बैठे हैं, मैं कहना चाहता हूं कि चुनाव जीतने के लिए कहां तक मर्यादा को तोड़ेंगे। चुनाव भले जीत जाएं, आप लोग देश को तोड़ने के लिए जिम्मेदार होंगे।

अध्यक्ष महोदय, उत्तर प्रदेश में यह घटना साधारण नहीं है। मुलायम सिंह जी ने जगदीश भाई को नि:स्वार्थ कहा। उन्होंने कभी कुछ नहीं मांगा। वहां जो स्मारक है, वे उसके सचिव थे। वहां प्रधानमंत्री जी और उपप्रधानमंत्री जी भी गए थे। दो-दो उपराट्रपति वहां गए थे। उन्होंने कभी स्टेज पर जाने की कोशिश नहीं की और कभी उनके साथ उनका चित्र नहीं खींचा गया, वे इस तरह के व्यक्ति थे। जहां ये रहते थे, मैं भी उस ट्रस्ट का मेम्बर हूं। वे ट्रस्ट के पैसे से खाना नहीं खाते थे, अपने पेंशन के पैसे से खाते थे। इस तरह के आदमी के साथ ऐसा व्यवहार उत्तर प्रदेश सरकार ने किया। गृह मंत्री जी, प्रधानमंत्री जी और उपराट्रपति जी ने इसके लिए संवेदना प्रकट की है। मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि उत्तर प्रदेश की सरकार का दिमाग कुछ ज्यादा खराब हो गया है, उनका दिमाग ही नहीं खराब हुआ है, बल्कि उन्होंने सारे देश की मर्यादाओं और परम्पराओं को तोड़ने का एक जघन्य काम किया है। मैं जगदीश भाई से बहुत नजदीकी से जुड़ा हुआ था।

अध्यक्ष महोदय, मैं ज्यादा नहीं कहना चाहता, लेकिन इतना जरूर कहना चाहता हूं कि वहां जिस तरह प्रशासन चल रहा है अगर वैसे ही चलता रहा तो मेरे जैसे आदमी को भी कहीं ऐसा कोई कदम न उठाना पड़े कि इसी सदन में, जहां हम आज आपको एक साल पूरा करने के लिए बधाई देने वाले हैं, कहीं ऐसा न हो कि मेरे जैसे व्यक्ति को भी पोटा में गिरफ्तार कर दिया जाए और उसकी सूचना आपको न मिले।â€¦ (व्यवधान)

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री (श्रीमती सुमा स्वराज) : अध्यक्ष महोदय, अभी जो विाय आदरणीय चन्द्रशेखर जी, मुलायम सिंह जी और पासवान जी ने यहां रखा है, वह एक बहुत दुखद प्रसंग है। चन्द्रशेखर जी द्वारा व्यक्त की गई वेदना और दुख में मैं स्वयं भी शिरकत करती हूं और सरकार की तरफ से भी साझेदारी प्रकट करती हूं।

अध्यक्ष जी, जो लोग भी जयप्रकाश जी के करीबी रहे हैं, वे जगदीश भाई से अपरिचित नहीं थे। चन्द्रशेखर जी स्वयं जानते हैं कि मैं खुद उनके बहुत करीबी अनुयायियों में से रही हूं। मुझे जयप्रकाश जी का बहुत स्नेह प्राप्त रहा है, इसलिए मुझे मालूम है कि जगदीश भाई का क्या रिश्ता जयप्रकाश जी के साथ था।

चन्द्रशेखर जी, मैं अदब के साथ सिर्फ एक ही बात कहना चाहूंगी कि इसमें कोई राजनीति नहीं हुई है। उन्होंने स्वयं यह कहा कि प्रधानमंत्री जी और उपराट्रपति जी का शोक संवेदना संदेश पहुंचा और गृहमंत्री जी ने यह कहा कि वे आगे खबर करवा देंगे। लेकिन जैसे उन्होंने यह सवाल पूछा है कि गृहमंत्री जी के आदेशों के बाद भी उनका अनुपालन क्यों नहीं हुआ? यह घटना कैसे घटी कि कोई सक्षम अधिकारी वहां नहीं पहुंचा। हम निश्चित तौर पर इस बात की जांच करवाएंगे। जो इस समय भावनाएं व्यक्त की गई हैं, वे भी गृहमंत्री जी तक पहुंचेंगी। लेकिन मैं इतना जरूर कहना चाहूंगी कि सरकार की ओर से भी और सदन की ओर से भी हम सब सादर आदरणीय जगदीश भाई को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इसमें जो चूक हुई है, उस चूक के ऊपर भी जो कार्रवाई उचित होगी, वह निश्चित तौर पर सरकार करेगी। उनकी वेदना और शोक में मैं अपने आपको पुनः सम्बद्ध करती हूं।

SHRI SOMNATH CHATTERJEE (BOLPUR): Sir, we all pay our homage and respect to Jagdish Bhai. It is unfortunate that such a feeling of respect has not been shown to him. Let us see what the Government does.

श्री राम विलास पासवान : अध्यक्ष जी, आप चेयर की तरफ से भी दो लाइन बोल दीजिए।

उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्री (श्री शरद यादव) : अध्यक्ष जी, सब लोग कह रहे हैं कि इसमें एक प्रस्ताव बनाकर सदन में पेश हो जाये तो जो कुछ भावनाएं यहां व्यक्त हुई हैं और जो गलती हुई है, वह यहां ठीक हो सकती है।

अध्यक्ष महोदय : जगदीश भाई के बारे में यहां जो कुछ कहा गया, वह सच है। सदन की संवेदना मैं समझ सकता हूं और इसलिए मैं सभी से विनती करता हूं कि एक मिनट के लिए खड़े रहें और जगदीश भाई को श्रद्धांजलि दें।

12.22 hrs.

(The Members then stood in silence for a short while.)